IJCRM

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की सामाजिक दक्षता का उनके कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारकों पर प्रभाव: एक अध्ययन

जितेन्द्र कुमार वर्मा [1*], डॉ. सपना जोशी [2]

[1] शोधार्थी, जेएलएन टी.टी. कॉलेज, नया बरधा, धर्मपुरा, कोटा, राजस्थान, भारत

[2] प्रोफेसर, जेएलएन टी.टी. कॉलेज, नया बरधा, धर्मपुरा, कोटा, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * जितेन्द्र कुमार वर्मा

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20543048

सारांश

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक केवल ज्ञान के संप्रेषक ही नहीं, बल्कि सामाजिक एवं व्यक्तित्व विकास के प्रेरक भी माने जाते हैं। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य अध्यापकों की सामाजिक दक्षता तथा व्यक्तित्व कारको के पारस्परिक संबंध और उन पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना है। सामाजिक दक्षता वह क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में प्रभावी, संतुलित तथा उत्तरदायी व्यवहार प्रदर्शित करता है, जबकि व्यक्तित्व अध्यापक के स्थायी मनोवैज्ञानिक गुणों और व्यवहारिक प्रवृत्तियों का समग्र रूप है। शोध में यह प्रतिपादित किया गया है कि अध्यापक की सामाजिक दक्षता व्यक्तित्व कारकों से घनिष्ठ रूप से संबद्ध होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग करते हुए अध्यापकों के एक प्रतिनिधि नमूने से प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन तथा टी – परीक्षण एवं एफ-परीक्षण जैसी सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया, जिससे विभिन्न समूहों के मध्य सामाजिक दक्षता और व्यक्तित्व कारकों से सम्बद्ध व्याख्या संभव हो सकी। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि जिन अध्यापकों में सामाजिक दक्षता उच्च स्तरीय होती है, वे कक्षा-परिस्थिति में अधिक प्रभावी शिक्षण-अधिगम वातावरण का निर्माण करते हैं साथ ही उनमे कार्योमुख व्यक्तित्व कारक भी उच्च स्तरीय होते है जो उन्हें विद्यालय कार्यों में प्रभावी, समायोजनशील, व्यवहारिक एवं समस्या समाधान योग्यता में दक्ष बनाते है|

शोध निष्कर्ष यह भी संकेत करते हैं कि अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सामाजिक एवं भावनात्मक दक्षताओं के विकास को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए, ताकि अध्यापकों का व्यक्तित्व संतुलित, कार्योन्मुख एवं संवेदनशील बन सके। इस प्रकार अध्यापकों में सामाजिक दक्षता और व्यक्तित्व के समन्वित विकास के माध्यम से न केवल शिक्षण-अधिगम की गुणवत्ता में वृद्धि संभव है, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास और सकारात्मक विद्यालयी संस्कृति के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया जा सकता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 08-04-2026
- **Accepted:** 31-05-2026
- **Published:** 02-06-2026
- **IJCRM:**5(3); 2026: 535-542
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

जितेन्द्र कुमार वर्मा, डॉ. सपना जोशी. माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की सामाजिक दक्षता का उनके कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारकों पर प्रभाव: एक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(3):535-542.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

कूट शब्द: सामाजिक दक्षता, सामाजिक कौशल, कार्योन्मुख व्यक्तित्व, व्यक्तित्व कारक, अध्यापक

© 2026 जितेन्द्र कुमार वर्मा, डॉ. सपना जोशी . This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

वर्तमान वैश्विक एवं प्रतिस्पर्धात्मक युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का प्रसार करना नहीं रह गया है, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा मानवीय मूल्यों के संवर्धन को भी समान रूप से महत्व दिया जा रहा है। इस व्यापक शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति में अध्यापक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। अध्यापक न केवल ज्ञान के स्रोत होते हैं, बल्कि वे विद्यार्थियों के व्यवहार, दृष्टिकोण तथा सामाजिक कौशलों के विकास में भी निर्णायक प्रभाव डालते हैं। इसलिए अध्यापक की सामाजिक दक्षता एवं व्यक्तित्व शिक्षा की गुणवत्ता को निर्धारित करने वाले प्रमुख कारकों में से एक माने जाते हैं।

सामाजिक दक्षता से आशय उस क्षमता से है जिसके माध्यम से व्यक्ति विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में प्रभावी, संतुलित एवं उपयुक्त व्यवहार प्रदर्शित करता है। यह क्षमता व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों के साथ सार्थक संबंध स्थापित करने, सहयोगात्मक वातावरण निर्मित करने तथा सकारात्मक सामाजिक अंतःक्रियाएँ विकसित करने में सहायक होती है। सामाजिक दक्षता में संप्रेषण कौशल, सहानुभूति, आत्म-नियमन, निर्णय क्षमता तथा समस्या समाधान जैसे अनेक आयाम सम्मिलित होते हैं।

दूसरी ओर व्यक्तित्व व्यक्ति के स्थायी मनोवैज्ञानिक गुणों, अभिरुचियों, दृष्टिकोणों तथा व्यवहारिक प्रवृत्तियों का समन्वित रूप है, जो उसके व्यवहार को दिशा प्रदान करता है। अध्यापक का व्यक्तित्व उसके शिक्षण शैली, कक्षा-प्रबंधन, विद्यार्थियों के साथ संबंधों तथा विद्यालयी वातावरण पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। जिन अध्यापकों का व्यक्तित्व संतुलित, सकारात्मक एवं संवेदनशील होता है, वे विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत बनते हैं और कक्षा में सहयोगात्मक एवं अनुकूल शिक्षण-अधिगम वातावरण का निर्माण करते हैं। अनुसंधानों से यह भी स्पष्ट हुआ है कि अध्यापक की सामाजिक दक्षता और व्यक्तित्व विशेषताएँ विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक समायोजन तथा भावनात्मक विकास से घनिष्ठ रूप से संबंधित होती हैं। उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अध्यापकों की सामाजिक दक्षता तथा व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करना तथा उनके मध्य संबंधों का अध्ययन करना है, ताकि शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक की प्रभावशीलता को बेहतर ढंग से समझा जा सके और अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक सार्थक एवं प्रभावी बनाया जा सके।

समस्या कथन (PROBLEM STATEMENT): "माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की सामाजिक दक्षता का उनके कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारकों पर प्रभाव - एक अध्ययन"

समस्या का औचित्य (Justification)

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में मानवीय मूल्यों और सामाजिक कौशलों का ह्रास हो रहा है। ऐसे में यह जानना आवश्यक है कि क्या हमारे अध्यापक सामाजिक रूप से इतने सक्षम हैं कि वे आने वाली पीढ़ी का मार्गदर्शन कर सकें? यह शोध अध्यापकों के चयन, प्रशिक्षण और उनके मनोवैज्ञानिक पहलुओं को समझने में सहायक सिद्ध होगा। यह अध्यापकों, विद्यार्थियों, शिक्षा विभाग और समाज के दृष्टिकोण से अपना विशेष महत्त्व रखता है|

शोध अध्ययन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या

प्रस्तुत शोध में मुख्य शब्दों का परिभाषीकरण निम्नलिखित है-

1. **माध्यमिक विद्यालय:** विद्यालय समाज द्वारा स्थापित वह संस्था है। जहाँ छात्र एवं अध्यापक मिलकर औपचारिक तौर पर निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षण क्रिया का आयोजन करते है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा शिक्षा से सम्बन्धित आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए केन्द्रीय स्तर पर एवं राजकीय स्तर पर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की स्थापना की गई। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालय जहाँ कक्षा 9 और कक्षा 10 के पाठ्यक्रम के अनुसार कक्षाओं का संचालन किया जाता है एवं शिक्षण प्रक्रियाओं का आयोजन किया जाता है, वह माध्यमिक विद्यालय कहलाते है।
2. **अध्यापक:** शिक्षण प्रक्रिया में अध्यापक का स्थान सर्वोपरि है। अध्यापक वह व्यक्ति है जो शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से विद्यार्थियों को ज्ञान, कौशल, मूल्यों तथा व्यवहारिक दक्षताओं का विकास कराने में मार्गदर्शन करता है। सैद्धान्तिक रूप से अध्यापक केवल ज्ञान देने वाला नहीं होता, बल्कि वह विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक एवं भावनात्मक विकास का प्रेरक और मार्गदर्शक होता है। अध्यापक शिक्षण की योजनाएँ बनाता है, उपयुक्त विधियों और साधनों का उपयोग करता है तथा विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार उन्हें सीखने के अवसर प्रदान करता है।

- **एडम्स (Adams):** के अनुसार – "शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसमें अध्यापक सचेत रूप से ऐसे वातावरण का निर्माण करता है जिससे विद्यार्थियों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन हो सके।"
- **क्लार्क (Clark):** के अनुसार – "अध्यापक वह व्यक्ति है जो विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया का निर्देशन करता है तथा उनके ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के विकास में सहायता प्रदान करता है।"

3. **सामाजिक दक्षता:** सामाजिक दक्षता समाज में रहकर अपने और दूसरों के हित में किये जाने वाले कार्यों के उचित सम्पादन है। आज की शिक्षा सामाजिक आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की पूर्ति का एक माध्यम है। अत: अध्यापक यदि समाज और शिक्षा तथा विद्यालय के मध्य निकट सम्पर्क स्थापन में कुशल हो, सामुदायिक संसाधनों का उपयोग करने में सक्षम हों, संसाधनों का उपयोग विद्यालय के लिए करने में सक्षम हों तथा सामुदायिक परिच्छेदिका निर्माण को महत्व देने वाला हो तो अवश्य ही इस दूरी को कम कर पाना संभव होता है। ऐसा करने वाला अध्यापक ही सामाजिक दक्ष कहा जाता है।
4. **कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक:** ''कार्योन्मुख से आशय अध्यापक को विद्यालय में आवंटित विभिन्न शैक्षिक, सहशैक्षिक, अन्य प्रशासनिक व व्यक्तिगत कार्यों के क्रियान्वयन व संपादन के प्रयोजन से है। व्यक्तित्व कारक के अर्थ को समझने से पूर्व व्यक्तित्व शब्द का अर्थ समझना आवश्यक है।" व्यक्तित्व शब्द की उद्गम लैटिन भाषा के परोसना शब्द से हुई मानी जाती है। परसोना का शाब्दिक अर्थ है मुखोटा। सामान्य तौर पर व्यक्तित्व व्यवहार के रूप में प्रदर्शित होता है साथ ही ऐसा संगठन है जिसमें अनेक मानवीय गुण संगठित होते है। वर्तमान में व्यक्ति के आन्तरिक एवं बाह्य गुणों को सम्मिलित करके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का अध्ययन किया जाने लगा है। इस प्रकार व्यक्ति के

© 2026 जितेन्द्र कुमार वर्मा, डॉ. सपना जोशी . This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

जन्मजात बाह्य एवं आन्तरिक गुणों का गत्यात्मक संगठन व्यक्तित्व कहलाता हैं।

कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक से तात्पर्य व्यक्तित्व के उन गुणों, प्रवृत्तियों और विशेषताओं से है जो किसी व्यक्ति को कार्य करने, लक्ष्य प्राप्त करने, जिम्मेदारी निभाने तथा कार्य में दक्षता और प्रतिबद्धता के साथ लगे रहने के लिए प्रेरित करते हैं। ये कारक व्यक्ति की कार्य-क्षमता, अनुशासन, परिश्रम, आत्म-नियंत्रण, निर्णय-क्षमता तथा कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को निर्धारित करते हैं। अर्थात, वे व्यक्तित्व गुण जो व्यक्ति को अपने कार्यों को प्रभावी, जिम्मेदार और लक्ष्य-उन्मुख तरीके से करने के लिए प्रेरित करते हैं, उन्हें कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक कहा जाता है।

शोध उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की सामाजिक दक्षताओं का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की सामाजिक दक्षता पर लिंगभेद के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों के कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारकों का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारकों पर लिंगभेद के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की सामाजिक दक्षताओं पर अध्यापन अनुभव के प्रभाव का अध्ययन करना।
6. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों के कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारकों पर अध्यापन अनुभव के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की सामाजिक दक्षताएँ औसत स्तर की होती है।
2. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की सामाजिक दक्षता पर लिंगभेद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
3. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों के कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक औसत स्तर की होते है।
4. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों के कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारकों पर लिंगभेद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
5. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की सामाजिक दक्षताओं पर अध्यापन अनुभव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
6. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों के कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारकों पर अध्यापन अनुभव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

शोध कार्य को आधार प्रदान करने हेतु निम्नलिखित भारतीय एवं विदेशी अध्ययनों का अवलोकन किया गया:

- बुच, एम.बी. (1974): भारत में शिक्षा के क्षेत्र में किए गए शोधों का संकलन कर शिक्षण प्रभावशीलता के मानकों को निर्धारित किया।
- कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (1979): भारतीय अध्यापकों के व्यक्तित्व आयामों और उनके शिक्षण व्यवहार के अंतर्संबंधों का अध्ययन किया।
- पांडेय, एस. (1985): माध्यमिक अध्यापकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और उनकी कार्य संतुष्टि के बीच धनात्मक संबंध पाया।
- सिंह, आर.पी. (1990): अध्यापक की सामाजिक दक्षता और कक्षा के वातावरण के प्रभाव का विश्लेषण किया।
- गौतम, एस. (2005): राजस्थान के माध्यमिक अध्यापकों के मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक सक्षमता के बीच सार्थक संबंध की पुष्टि की।
- शर्मा, ए.के. (2012): व्यक्तित्व कारकों का शिक्षण की गुणवत्ता पर प्रभाव का अध्ययन कर बताया कि बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले अध्यापक अधिक सामाजिक दक्ष होते हैं।
- वर्मा, पी. (2015): कार्योन्मुख व्यक्तित्व और संगठनात्मक प्रतिबद्धता के बीच भारतीय संदर्भ में शोध किया।
- गॉटमैन, जे. (1975): सामाजिक कौशल और बच्चों की लोकप्रियता के बीच संबंधों का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अध्ययन किया।
- लेविन्सन एवं अन्य (1980): सामाजिक सक्षमता और नैदानिक अवसाद के बीच के संबंधों का विश्लेषण किया।
- वेन्ट्ज़ेल, के.आर. (1991): स्कूल में सामाजिक जिम्मेदारी और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कड़ी स्थापित की।
- जेनिंग्स और ग्रीनबर्ग (2009): कक्षा के परिणामों के संबंध में अध्यापक की सामाजिक और भावनात्मक दक्षता (SEC) के महत्व को प्रतिपादित किया।
- डोज, के.ए. (1986): बच्चों और वयस्कों में सामाजिक सूचना प्रसंस्करण और सामाजिक सक्षमता के मॉडल का विकास किया।
- रुबेरिन (2010): अध्यापक के व्यक्तित्व का छात्रों के व्यवहारिक परिवर्तन पर प्रभाव का अध्ययन किया।
- महीन सेटिन (2013): व्यक्तित्व लक्षणों और संगठनात्मक समर्थन के बीच संबंधों का तुर्की सैन्य अकादमी के संदर्भ में अध्ययन किया।
- पापास्टिलियानो (2013): परामर्श मनोविज्ञान के क्षेत्र में सामाजिक दक्षता के महत्व को रेखांकित किया।

शोध न्यादर्श

प्रस्तुत शोध हेतु बून्दी जिले के माध्यमिक विद्यालयों से 160 अध्यापकों का चयन किया गया है| कुल न्यादर्श में यादृच्छिक प्रक्रिया से 80 पुरुष एवं 80 महिला अध्यापकों को शामिल किया गया है|

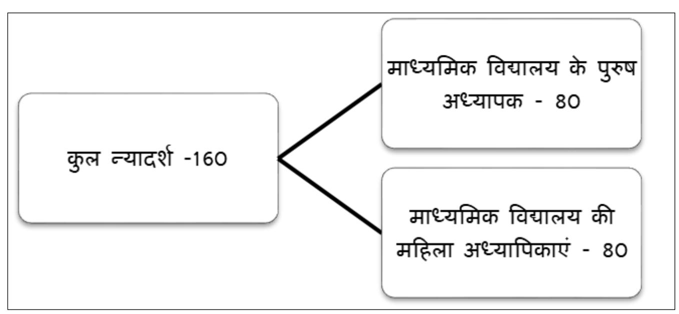

परिसीमन

- यह अध्ययन केवल राजस्थान के बून्दी जिले तक सीमित है।

© 2026 जितेन्द्र कुमार वर्मा, डॉ. सपना जोशी . This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

- इस अध्ययन में केवल माध्यमिक स्तर के अध्यापकों को सम्मिलित किया गया है।
- यह अध्ययन केवल सामाजिक दक्षता और कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारकों तक ही सीमित है।

शोध विधि

शोध कार्य हेतु विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि अपनाई गई है।

शोध सांख्यिकी

डेटा विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन,प्रस्तुत शोध में दत्त विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, टी-परिक्षण एवं एफ परिक्षण का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का सांख्यिकी विश्लेषण

1. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की सामाजिक दक्षता

माध्यमिक अध्यापक न्यादर्श के कुल पर सामाजिक दक्षता पर प्राप्तांकों के मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना की गई। गणना किये गये मध्यमान व मानक विचलन को सारणी संख्या -.1 में प्रदर्शित किया है।

सारणी संख्या 1: माध्यमिक अध्यापकों के कुल न्यादर्श पर सामाजिक दक्षता के मध्यमान, मानक विचलन एवं औसत प्राप्तांक

क्र.स.	आयाम	कुल न्यादर्श (N-160)		मापनी औसत प्राप्तांक
		मध्यमान	मानक विचलन	
1.	सामाजिक दक्षता	85.269	15.700	60

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी संख्या 1 के अनुसार माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की कुल सामाजिक दक्षता पर प्राप्त मध्यमान 85.269 व मानक विचलन 15.700 है। सामाजिक दक्षता मापनी का अधिकतम प्राप्तांक 120 व न्यूनतम प्राप्तांक 0 है तथा औसत प्राप्तांक 60 होता है। कुल माध्यमिक विद्यालय अध्यापक न्यादर्श से प्राप्त मध्यमान औसत मध्यमान से अधिक है। अत: माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की सामाजिक दक्षता औसत से अधिक स्तर की होती है। निष्कर्षत: वर्तमान शोध अध्ययन की परिकल्पना संख्या-1 अचयनित की जाती है। जिसके अनुसार माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की सामाजिक दक्षता औसत स्तर की होती है।

2. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की सामाजिक दक्षता पर लिंगभेद का प्रभाव

सामाजिक दक्षता पर लिंगभेद का प्रभाव का अध्ययन करने के लिए कुल पुरुष माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों एवं महिला माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की सामाजिक दक्षता मापनी पर प्राप्तांकों के मध्यमान व मानक विचलन की गणना की गई है। पुरुष एवं महिला अध्यापकों में अन्तर की सार्थकता के लिए टी-मान की गणना की गई है। गणना किये गये मध्यमान, मानक विचलन तथा टी-मान सारणी संख्या 2 में प्रदर्शित किए गए है। माध्यमिक विद्यालय पुरुष अध्यापक एवं माध्यमिक विद्यालय महिला अध्यापिकाओं की सामाजिक दक्षता मापनी पर प्राप्त मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मान

सारणी संख्या 2: माध्यमिक विद्यालय पुरुष अध्यापक एवं माध्यमिक विद्यालय महिला अध्यापिकाओं की सामाजिक दक्षता मापनी पर प्राप्त मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मान

क्र.स.	आयामों के नाम	पुरुष अध्यापक (N-80)		महिला अध्यापक (N-80)		टी-मान
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
1.	सामाजिक दक्षता	89.025	16.371	81.513	14.171	3.103**

1. * 0.05 टी-मान पर सार्थक
2. ** 0.01 टी-मान पर सार्थक

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी संख्या 2 के अनुसार अध्यापक सामाजिक दक्षता मापनी के कुल पर माध्यमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों का प्राप्त मध्यमान 89.025 एवं मानक विचलन 16.371 है तथा महिला अध्यापिकाओं का कुल प्राप्त मध्यमान 81.513 मानक विचलन 14.171 है। दोनों मध्यमानों के अन्तर का टी-मान 3.103 है। जो कि 0.01 सार्थक टी-मान से अधिक है। पुरुष माध्यमिक विद्यालय अध्यापक की सामाजिक दक्षता पर कुल प्राप्त मध्यमान महिला माध्यमिक विद्यालय अध्यापिकाओं के कुल प्राप्त मध्यमान से अधिक हैं। निष्कर्षत: वर्तमान अध्ययन की परिकल्पना संख्या-2 कुल सामाजिक दक्षता के संदर्भ में अचयनित की जाती है। जिसके अनुसार माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की कुल सामाजिक दक्षता पर अध्यापक लिंगभेद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

3. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों का कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक

कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारकों का मापन करने के लिए 160 न्यादर्श का चयन किया गया है। कुल माध्यमिक अध्यापक न्यादर्श के कुल कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक मापनी पर प्राप्तांकों के मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना की गई। गणना किये गये मध्यमान व मानक विचलन को सारणी संख्या 3 में प्रदर्शित किया है।

सारणी संख्या 3: माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों का कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक मापनी से प्राप्त मध्यमान मानक विचलन एवं औसत प्राप्तांक

क्र.स.	कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक	कुल न्यादर्श (N-160)		मापनी औसत प्राप्तांक
		मध्यमान	मानक विचलन	
1.	कुल	105.169	15.650	80

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी संख्या 3 के अनुसार माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों के कुल कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारकों पर प्राप्त मध्यमान 105.169 व मानक विचलन 15.650 है। कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक मापनी का अधिकतम प्राप्तांक 160 व न्यूनतम प्राप्तांक 0 है तथा औसत प्राप्तांक 80 होता है। कुल माध्यमिक विद्यालय अध्यापक न्यादर्श से प्राप्त मध्यमान औसत मध्यमान से अधिक है। अत: माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों के कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक औसत स्तर से अधिक है। निष्कर्षत: वर्तमान शोध अध्ययन की परिकल्पना संख्या-3 अचयनित की जाती है। जिसके अनुसार माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों के कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक औसत स्तर के होते है।

© 2026 जितेन्द्र कुमार वर्मा, डॉ. सपना जोशी . This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

4. माध्यमिक विद्यालय अध्यापक कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारकों पर लिंगभेद का प्रभाव

वर्तमान शोध अध्ययन में 160 माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों का न्यादर्श लिया गया है। जिसमें 80 पुरुष माध्यमिक विद्यालय अध्यापक व 80 महिला माध्यमिक विद्यालय अध्यापिकाओं को लिया गया है। कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारकों पर लिंगभेद का प्रभाव का अध्ययन करने के लिए कुल पुरुष माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों एवं महिला माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक मापनी के कुल एवं आयामों पर मध्यमान व मानक विचलन की गणना की गई है। पुरुष एवं महिला अध्यापकों में अन्तर की सार्थकता के लिए टी-मान की गणना की गई है। गणना किये गये मध्यमान, मानक विचलन तथा टी-मान सारणी संख्या 4 प्रदर्शित किए गए है।

सारणी संख्या 4: माध्यमिक विद्यालय पुरुष अध्यापक व महिला अध्यापिकाओं का कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक मापनी पर प्राप्त मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मान

क्र.स.	आयामों के नाम	पुरुष अध्यापक (N-80)		महिला अध्यापक (N-80)		टी-मान
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
1.	कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक	114.763	15.405	95.575	11.102	9.038**

1. * 0.05 टी-मान पर सार्थक
2. ** 0.01 टी-मान पर सार्थक

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी संख्या 4 के अनुसार अध्यापक कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक मापनी के कुल पर माध्यमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों का प्राप्त मध्यमान 114.763 एवं मानक विचलन 15.405 है तथा माध्यमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं का कुल प्राप्त मध्यमान 95.575 मानक विचलन 11.102 है। दोनों मध्यमानों के अन्तर का टी-मान 9.038 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक टी-मान से अधिक है। अत: माध्यमिक विद्यालय पुरुष अध्यापकों का कुल कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारकों पर कुल प्राप्त मध्यमान माध्यमिक विद्यालय महिला अध्यापिकाओं के कुल प्राप्त मध्यमान से अधिक हैं। निष्कर्षत: वर्तमान अध्ययन की परिकल्पना संख्या-4 कुल कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक के संदर्भ में अचयनित की जाती है। जिसके अनुसार माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की कुल कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक पर अध्यापक लिंगभेद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

5. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों के अध्यापन अनुभव का सामाजिक दक्षता पर प्रभाव

प्रस्तुत शोध में अध्यापक सामाजिक दक्षता पर अध्यापन अनुभव के प्रभाव का अध्ययन सामाजिक दक्षता मापनी द्वारा किया गया है। औसत अध्यापन अनुभव, औसत से अधिक अध्यापन अनुभव एवं उच्च अध्यापन अनुभव अध्यापक समूह का कुल सामाजिक दक्षता पर प्राप्तांकों के मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना की गई। गणना किये गये मध्यमान का मानक विचलन को सारणी संख्या 5 में प्रदर्शित किया है।

सारणी संख्या – 5: माध्यमिक विद्यालय अध्यापन अनुभव अध्यापक समूह का सामाजिक दक्षता मापनी पर मध्यमान व मानक विचलन

क्र.स.	आयाम	औसत अध्यापन अनुभव अध्यापक (N-87)		औसत से अधिक अध्यापन अनुभव अध्यापक (N-35)		उच्च अध्यापन अनुभव अध्यापक (N-37)	
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन
1.	सामाजिक दक्षता	85.747	16.879	83.628	13.051	85.910	15.438

उपर्युक्त सारणी संख्या 5 के अनुसार माध्यमिक विद्यालय में औसत अध्यापन अनुभव अध्यापक समूह का कुल सामाजिक दक्षता का मध्यमान 85.747 तथा मानक विचलन 16.879 हैं, औसत से अधिक अध्यापन अनुभव अध्यापक समूह का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमश: 83.628 तथा 13.051 हैं, तथा उच्च अध्यापन अनुभव अध्यापक समूह का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमश: 85.918 तथा 15.438 प्राप्त हुआ हैं। गणना से प्राप्त मध्यमानों में उच्च अध्यापन अनुभव अध्यापकों का मध्यमान सबसे अधिक तथा औसत से अधिक अध्यापन अनुभव अध्यापक समूह का मध्यमान सबसे कम प्राप्त हुआ है। अध्यापकों के तीनों समूह में उत्तर की सार्थक के लिए प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी का प्रयोग किया गया जिसका सारांश सारणी संख्या 5.1 में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी संख्या – 5.1:

प्रसरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान वर्ग	एफ-मान
समूह के मध्य प्रसरण	2	129.276	64.638	0.256**
समूह के अन्तर्गत प्रसरण	157	39587.360	252.021	

1. * 0.05 एफ-मान पर सार्थक
2. ** 0.01 एफ-मान पर सार्थक

उपरोक्त सारणी 5.1 के अनुसार गणना में प्राप्त एफ-मान 0.256 हैं, जो 0.01 स्तर पर सार्थक एफ-मान से कम हैं। अत: अध्यापन अनुभव अध्यापक समूह में कुल सामाजिक दक्षता पर कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं। इसलिए अध्यापन अनुभव का कुल सामाजिक दक्षता पर सार्थक प्रभाव नहीं होता हैं। अत: वर्तमान अध्ययन की परिकल्पना संख्या-11 चयनित की जाती हैं। जिसके अनुसार माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों में अध्यापन अनुभव का सामाजिक दक्षता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता हैं।

6. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों में अध्यापन अनुभव का कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक पर प्रभाव

© 2026 जितेन्द्र कुमार वर्मा, डॉ. सपना जोशी . This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में अध्यापक कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक पर अध्यापन अनुभव अध्यापक समूह के प्रभाव का अध्ययन कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक मापनी द्वारा किया गया है। औसत अध्यापन अनुभव, औसत से अधिक अध्यापन अनुभव एवं उच्च अध्यापन अनुभव अध्यापक समूह का कुल कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक एवं आयाम पर प्राप्तांकों के मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना की गई। गणना किये गये मध्यमान का मानक विचलन को सारणी संख्या 6 में प्रदर्शित किया है।

सारणी संख्या 6: माध्यमिक विद्यालय अध्यापन अनुभव अध्यापक समूह का कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक मापनी के कुल एवं आयाम पर मध्यमान व मानक विचलन

क्र.स.	आयामों के नाम	औसत अध्यापन अनुभव अध्यापक (N-87)		औसत से अधिक अध्यापन अनुभव अध्यापक (N-35)		उच्च अध्यापन अनुभव अध्यापक (N-37)	
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन
1.	कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक	103.781	17.707	105.771	14.120	108.351	15.091

उपर्युक्त सारणी संख्या 6 के अनुसार माध्यमिक विद्यालय में औसत अध्यापन अनुभव अध्यापक समूह का कुल कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक का मध्यमान 103.781 तथा मानक विचलन 17.707 हैं, औसत से अधिक अध्यापन अनुभव अध्यापक समूह का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 105.771 तथा 14.120 हैं, तथा उच्च अध्यापन अनुभव अध्यापक समूह का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 108.351 तथा 15.091 प्राप्त हुआ हैं। गणना से प्राप्त मध्यमानों में उच्च अध्यापन अनुभव अध्यापकों का मध्यमान सबसे अधिक तथा औसत अध्यापन अनुभव अध्यापक समूह का मध्यमान सबसे कम प्राप्त हुआ है। अध्यापकों के तीनों समूह में उत्तर की सार्थक के लिए प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी का प्रयोग किया गया जिसका सारांश सारणी संख्या 6.1 में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी संख्या – 6.1

प्रसरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान वर्ग	एफ-मान
समूह के मध्य प्रसरण	2	552.809	276.404	1.016*
समूह के अन्तर्गत प्रसरण	157	42685.450	271.880	

1. * 0.05 एफ-मान पर सार्थक
2. ** 0.01 एफ-मान पर सार्थक

उपरोक्त सारणी 6.1 के अनुसार गणना में प्राप्त एफ-मान 1.016 हैं, जो 0.05 स्तर पर सार्थक एफ-मान से कम हैं। अतः अध्यापन अनुभव अध्यापक समूह में कुल कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक पर कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं। इसलिए अध्यापन अनुभव का कुल कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक पर सार्थक प्रभाव नहीं होता हैं। अतः वर्तमान अध्ययन की परिकल्पना संख्या-6 चयनित की जाती हैं। जिसके अनुसार माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों में अध्यापन अनुभव का कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

परिणाम और निष्कर्ष

1. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की सामाजिक दक्षता औसत से अधिक स्तर की होती है।
2. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों की सामाजिक दक्षता पर लिंगभेद का सार्थक प्रभाव होता है।
3. पुरुष अध्यापको की सामाजिक दक्षता महिला अध्यापिकाओं की तुलना में अधिक होती है।
4. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों के कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक औसत से अधिक स्तर के होते है।
5. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों के कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारकों पर लिंगभेद का सार्थक प्रभाव होता है।
6. पुरुष अध्यापको के कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक महिला अध्यापिकाओं की तुलना में अधिक पाए गए।
7. उच्च अध्यापन अनुभव वाले अध्यापकों की सामाजिक दक्षता उच्च स्तरीय होती है।
8. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों में अध्यापन अनुभव अध्यापक समूह में सामाजिक दक्षता पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
9. उच्च अध्यापन अनुभव वाले अध्यापकों के कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक उच्च स्तरीय होते है।
10. माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों में अध्यापन अनुभव का कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है

भावी शोध हेतु सुझाव

- प्रस्तुत शोध अध्ययन में छोटा न्यादर्श लेते हुए केवल 280 अध्यापक को अध्ययन के लिए लिया गया है। भविष्य में भावी शोधकर्ता इससे बड़ी जनसंख्या वाले न्यादर्श को चुना जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध में सामाजिक दक्षता और कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारकों पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। भावी शोधकर्ता द्वारा इनके मध्य सहसंबंध का अध्ययन किया जा सकता है। इनके विकास के लिए उत्तरदायी कारकों पर अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोधकार्य में सामाजिक दक्षता एवं कार्योन्मुख व्यक्तित्व कारक के अन्तर्गत सीमित आयाम लिये गये है। भावी शोधार्थी द्वारा इसमें अन्य आयाम सम्मिलित किये जा सकते है।
- प्रस्तुत शोध कार्य के अन्तर्गत केवल माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों को लिया गया है, भावी शोध के अन्तर्गत प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों को लिया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय को लिया गया है। भावी शोधकर्ता राजीव गाँधी विद्यालय, नवोदय विद्यालय, मिलिट्री स्कूल आदि को सम्मिलित कर सकता है।

शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

1. अध्यापक चयन प्रक्रिया में सुधार

© 2026 जितेन्द्र कुमार वर्मा, डॉ. सपना जोशी . This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अध्यापकों की नियुक्ति के समय केवल शैक्षणिक योग्यता ही नहीं, बल्कि सामाजिक दक्षता एवं व्यक्तित्व कारकों का भी मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

2. अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सुदृढ़ीकरण

प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सामाजिक कौशल, संप्रेषण क्षमता, सहानुभूति एवं भावनात्मक दक्षता को विशेष रूप से शामिल किया जाना आवश्यक है।

3. प्रभावी शिक्षण-अधिगम वातावरण का निर्माण

सामाजिक रूप से दक्ष अध्यापक कक्षा में बेहतर वातावरण बनाते हैं, इसलिए विद्यालयों को इस दिशा में जागरूक प्रयास करने चाहिए।

4. व्यक्तित्व विकास पर बल

अध्यापकों के कार्योन्मुख व्यक्तित्व (जैसे—जिम्मेदारी, अनुशासन, निर्णय क्षमता) के विकास हेतु नियमित कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए।

5. लिंग-संवेदनशील प्रशिक्षण की आवश्यकता

शोध में लिंग के आधार पर अंतर पाए गए हैं, अतः प्रशिक्षण कार्यक्रमों को लिंग-संवेदनशील बनाया जाना चाहिए।

6. सेवारत प्रशिक्षण (In-service Training) का महत्व

कार्यरत अध्यापकों के लिए निरंतर प्रशिक्षण द्वारा उनकी सामाजिक दक्षता और व्यक्तित्व गुणों को विकसित किया जा सकता है।

7. विद्यालयी संस्कृति का विकास

सामाजिक दक्ष एवं संतुलित व्यक्तित्व वाले अध्यापक सकारात्मक, सहयोगात्मक एवं मूल्यपरक विद्यालयी वातावरण के निर्माण में सहायक होते हैं।

8. विद्यार्थियों के समग्र विकास में योगदान

ऐसे अध्यापक विद्यार्थियों के सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Buch MB. A Survey of Research in Education. Baroda: Centre of Advanced Study in Education, Maharaja Sayajirao University; 1974.
2. Buch MB. Second Survey of Research in Education. Baroda: Society for Educational Research and Development, Maharaja Sayajirao University; 1979.
3. Buch MB. Third Survey of Research in Education. New Delhi: National Council of Educational Research and Training; 1987.
4. Buch MB. Fourth Survey of Research in Education. New Delhi: National Council of Educational Research and Training; 1991.
5. Buch MB. Fifth Survey of Research in Education. New Delhi: National Council of Educational Research and Training; 1998.
6. Lewinsohn PM, Mischel W, Chaplin W, Barton R. Social competence and depression: the role of illusory self-perceptions. Journal of Abnormal Psychology. 1980;89(2):203-212.
7. Dodge KA, Pettit GS, McClaskey CL, Brown MM. Social competence in children. Monographs of the Society for Research in Child Development. 1986;51(2):1-85.
8. Wentzel KR. Social competence at school: relation between social responsibility and academic achievement. Review of Educational Research. 1991;61(1):1-24.
9. Haager D, Watson C, Willows DM. Social competence of students with learning disabilities. Journal of Learning Disabilities. 1995;28(4):205-215.
10. Dykens EM, Cohen DJ. Effects of Special Olympics International on social competence. Journal of the American Academy of Child and Adolescent Psychiatry. 1996;35(2):223-229.
11. Katz LG, McClellan DE. Fostering Children's Social Competence: The Teacher's Role. Washington (DC): National Association for the Education of Young Children; 1997.
12. Lavoie R. Social Competence and the Child with Learning Disabilities. New York: Simon and Schuster; 2005.
13. Rose-Krasnor L. The nature of social competence: a theoretical review. Social Development. 1997;6(1):111-135.
14. शर्मा, आर.ए. (2013) — शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
15. श्रीवास्तव, रूपाली — शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, आगरा: संजय पब्लिकेशन्स।
16. गुप्त, भगवान स्वरूप; दुबे, काया; जैन, अंजू — शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, आगरा: कुमार पब्लिकेशन।
17. ढोढियाल, सचिदानन्द एवं फाटक, अरविन्द — शैक्षिक अनुसंधान विधि शास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
18. भटनागर, ए.बी. एवं मीनाक्षी (1992) — मापन एवं मूल्यांकन, मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
19. शर्मा, एन.के. (2009) — शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, नई दिल्ली: के.एस.के. पब्लिशर्स।
20. भट्टाचार्य, जी.सी. (2013) — अध्यापक शिक्षा, आगरा: श्री विनोद पुस्तक मन्दिर।
21. शास्त्री, के.एन. (2008) — अध्यापक शिक्षा, नई दिल्ली: प्रेरणा प्रकाशन।

© 2026 जितेन्द्र कुमार वर्मा, डॉ. सपना जोशी . This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

22. कपिल, एच.के. (2012) — अनुसंधान विधियाँ, आगरा: एच.पी. भार्गव बुक हाउस।
23. रायजादा, बी.एस. एवं शर्मा, वन्दना (2008) — शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व, जयपुर।
24. पाठक, पी.डी. — शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा।
25. भटनागर, सुरेश (1980) — शिक्षा मनोविज्ञान, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस।
26. श्रीवास्तव, जे.पी. (1988-89) — सामाजिक सर्वेक्षण विधियाँ एवं सिद्धान्त, नई दिल्ली।
27. त्रिवेदी, आर.एम. — रिसर्च मेथडोलॉजी।
28. गैरेट, एच.ई. — मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी।
29. अग्रवाल, जे.सी. — भारतीय शिक्षा पद्धति: स्वरूप एवं समस्याएँ

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

जितेन्द्र कुमार वर्मा कोटा विश्वविद्यालय, कोटा में शिक्षा शास्त्र में शोधारत है। शिक्षण, शिक्षण प्रशिक्षण एवं सहशैक्षणिक गतिविधियों में डेढ़ दशक का अनुभव, लेखन एवं संपादक कार्य से जुड़ाव है। आपके शोध प्रमुखत: अध्यापकों की सामाजिक दक्षता और व्यक्तिव कारकों से संबंधित है।

प्रो. (डॉ.) सपना जोशी, प्रोफेसर एवं शोध पर्यवेक्षक, जवाहरलाल नेहरू शिक्षा एवं प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा (राजस्थान)। शिक्षा शास्त्र, शिक्षक शिक्षा, शैक्षिक अनुसंधान एवं मार्गदर्शन-परामर्श के क्षेत्र में आपका दीर्घकालीन विशिष्ट अकादमिक योगदान है। आप कोटा विश्वविद्यालय के 'अध्ययन मंडल' व वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय अध्ययन केंद्र संयोजक की सक्रिय भूमिका निभा रही है और आपके कुशल निर्देशन में 20 पीएचडी शोधार्थी उपाधि प्राप्त कर चुके हैं और 51 से अधिक उच्च गुणवत्ता वाले शोध-पत्र राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। आप उच्च शिक्षा एवं शोध गुणवत्ता संवर्धन से जुड़े अनेक शैक्षिक उपक्रमों में शिक्षा शास्त्र की प्रतिष्ठित विशेषज्ञ मानी जाती हैं।

© 2026 जितेन्द्र कुमार वर्मा, डॉ. सपना जोशी . This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/